RESEARCH FRONT

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

चंद्रकांता के कथा साहित्य में काश्मिरी शरणार्थियों की समस्याएँ

अमोल पालकर
स्नातक एवं स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
बलभिम महाविद्यालय, बीड(महाराष्ट्र)
Email:amolpalkar00@gmail.com

साठोत्तरी हिंदी लेखिकाओं में चंद्रकांता का विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान हैं |व्यापक विजन और अनुभूति पर आधारित लेखन होने के कारण उनका साहित्य कई बुनियादी सच्चाईयों को उजागार करता है | चंद्रकांता की जन्मभूमि भू-स्वर्ग कश्मिर हैं जो आज आतंक और यातनाओं से भरी पडी है |वहाँ हत्या,हत्याकांड और अत्याचारों की एक श्रृंखला ही बनी हुई दिखाई देती है |शरणार्थियों की समस्या तो अत्यंत भयानक हो चुकी है | अपने घर से निष्कासित होकर वे अब अपमान,घृणा और अभावग्रस्त जिंदगी जीने के लिए मजबूर हुए हैं | इस बात का वास्तविक चित्रण चंद्रकांता ने अपने कथा साहित्य में चित्रित किया है |

'यहाँ वितस्ता बहती है' उपन्यास में कबाईली आक्रमण के कारण यह समस्या निर्माण हो जाती है |उपन्यास के राजनाथ और गाँव की समिति के सदस्य घर-घर जाकर धन,कपडे, बर्तन आदी इकट्ठा कर शरणार्थियों के घरों कैंपों में जाकर बाँट आते थे | पहाडों के बीच बसे गाँवों की हालत तो बहुत ही बदतर हो चुकी थी | वहाँ तक सरकारी मदद पहुँचना मुश्किल था,उपर से स्वार्थी लोग कम नहीं थे, "यों भी सरकारी मदद उँट के मुँह में जीरे के समान ही थी | बीच में कफन बेचकर खानेवाले भी ऐसे आपात्कालीन अवसरों से लाभ उठाने की ताक में हमेशा से रहते आए हैं....."[1]

'कथा सतिसर'उपन्यास शरणार्थियों की विपथगाथा ही है | काश्मीर में निष्कासन कादौर हमेशा होता रहा है | सुलतान सिकंदर ने 1389 से 1413 तक धर्म के नाम पर हिंदुओं को निष्कासित किया | इस समय काश्मीरी पंडितों के मात्र ग्यारह घर बचे हुए थे |निष्कासित हिंदुओं ने भारत में गोवा तक शरण ली थी परंतु उसके पुत्र बडशाह ने फिर से काश्मीरी पंडितों को वादी में वापस बुलाया था | अठारहवीं शती में अफगाण शासकों के अत्याचारों से तंग आकर फिर कई काश्मीरी पंडित प्रदेश छोड़कर गए |फिर 23 अक्तूबर,1947 में काश्मीर पर कबाईली आक्रमण हुआ | इस समय हुई आगजनी ,लूटपाट और मारकाट से हाहाकार मचा | मक्खन सिंह मुजफराबाद से बदहवास रोती कलपती औरतों और बच्चों को लेकर लुकते छिपते उटी तक पहुँच जाता है | रास्ते में बारीश,ओले, पथरीले पहाड़ और

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

जंगली जानवरों का भय था | पत्तों पर पैर पड़ने पर भी दुश्मन को सुराग मिलने का उसे डर लगता था | सालभर की निक्की भूख से रोने पर उसने चुन्नी से उसका मुँह बाँध दिया था ताकि दुश्मन को पता न चले |

जम्मू हमेशा ही काश्मीरी पंडितों की शरणस्थली रही है |इ.स.1990 में भी आतंकवादियों के अत्याचारों से पीड़ित पंडितों ने इस शहर के मंदिर, धर्मशालाएँ,यात्रीगृह, सराया,सरकारी स्कूल, अधबने मकान जहाँ भी सिर पर छत मिले वहाँ पर धोती, टाट चद्दरें बाँधकर आश्रय लिया | सरकार की ओर से भी कैंप खोले गए | जिनके पास सफर के लिए गुँजाईश थी वे चंडीगढ, देहरादून, पंजाब, महाराष्ट्र तक चले गए | दिल्ली में तो एक खासी तादाद में लोग विस्थापित हुए | इस विस्थापन ने उनके सामने कई समस्याओं को खड़ा किया | सरकार इन्हें एक सौ पच्चीस रुपये का अनुदान प्रतिमाह देती रही ,परंतु महानगर में इतने में उदर पूर्ति भी असंभव थी |प्राइममिनिस्टर रिलीफ फंड से आए करीब तीस लाख रुपये भी कुछ ही दिनों में खत्म हो गए फिर भी शरणार्थियों का प्रश्न अनुत्तरित ही रहा | काश्मीरी समिति ने बच्चों के लिए स्कूल कॉलेज में प्रवेश, नौकरियाँ, रुके हुए वेतन आदि संबंधी कई प्रश्न उठाए परंतु राजनेताओं ने इसे अनदेखा ही किया | वे वोट बैंक चाहते थे , जो विस्थापित पंडित नहीं दे सकते थे | जॉर्ज फर्नांडीस का कथन इसी का सूचक हैं , "पंडित कुसूरवार हैं ,उन्होंने सरकारी नौकरियों में बहुसंख्यकों का हक छिना | इसी से आतंकवाद का जन्म हुआ है | "[2]

अपने गाँव कुपवाडा की बर्फिली हवा में रहनेवाले संसारचंद्र को धूप में राशन की कतार में देर तक खड़ा होना मुश्किल होता है तो वह चिड़चिड़ाहट से राशन बाँटने में जल्दी करने के लिए कहते हैं | परिणामस्वरूप नफरत भरे शब्द सुनते हैं , "मँगते,सो भी हाथ चढ़े | खड़े रहो,बारी आने पर तुम्हें भी मिलेगा |"[3]यह शरणार्थी टेंट खुले मैदान और कँटीले झाड़-झंखाड़ में लगे थे जिसमें एक जहरिले साँप के काँटने से संसारचंद्र की मृत्यु होती है | ब्रजकृष्ण की पत्नी कैंप में ही बच्चे को जन्म देती हैं | डॉक्टर,दवाइयाँ और डिस्पेंसरी के अभाव में बच्चे की बिमारी बढ़ती है | निजी डॉक्टर के पास जाने के लिए उनके पास पैसे भी नहीं हैं | सरकार ने सेवा समिति के लोगों को हर शरणार्थी परिवार के लिए नौ बाई चौदह का कमरा देने का आश्वासन दिया था | शरणार्थी आठ -आठ जनों के परिवार समेत इस तंग कोठरी में किस प्रकार रहेंगे इस सोच में पड़ गए हैं |शरणार्थियों के टेंटों की अवस्था तो अत्यंत बुरी हैं | टैंट फटे हैं, लैट्रिनों में पानी नहीं हैं | झिर्रियों संधों से बहनेवाली तेज लू के झोंके से स्टोव भी बुझ जाता है | सभी औरतें एक कोने में खाना पकाती हैं | बच्चे व्यंग से कहते हैं, "सालों साल,टेंटों में माँ -बाप और नाती पोती साथ रहेंगे, तो बच्चे पैदा होना बंद हो जाएगा | .....ऐसे में जनसंख्या वृद्धि की समस्या हल हो जाएगी | हींग न फटकरी , रंग चोखा |सरकार के निरोध के पैसे भी बच जाएँगे |"[4]

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

'कोठे पर कागा' कहानी का निष्कासित बूढा गाशकौल टेंटों की जिंदगी से दुखी और परेशान हैं | टेंटों में हर-दिन दी जानेवाली दाल उसे पचती नहीं है | वह हरा साग ढुँढते रहता है | नमक-मिर्च के साथ दो कौर चावल खाकर वह सो जाता है | कई दिनों से उसके पेट में ऐठन हो रही है | परिणामस्वरुप उसका शरीर अस्थि-पंजर बन चुका है | जिस टेंट में उसकी मृत्यु होती है वहाँ पर लोग इकट्ठा होकर खड़े भी नहीं हो सकते हैं, "तिरपाल के खेमें में रोटी,कपड़े और मकान की जरुरतों के नाम पर दो खटिया, लिहाफ, गद्दा,चटाई,तवा-पतीला और आटे-दाल की दो-चार पोटलियों-शोटलियों के बीच चारेक फूट भर की जगह बचती थी उसमें चार जने खड़े हो सकने से ज्यादा की गुँजाइश नहीं थी |"[5] गाशकौल गाँव वापस लौटने की तीव्र इच्छा रखता था परंतु अंत तक लौट सका | 'वितस्ता का ज़हर ' कहानी का निरंजन अपने परिवार के साथ घर छोड़ने के मजबूर हो जाता है | वह घरद्वार बेचकर, पैसा इकट्ठा कर चला जाना चाहता था परंतु सरकार ने इस व्यवहार पर रोक लगाई है | इनकी मजबुरी समझकर वहाँ के लोग इनकी जायदाद को खरीदते भी नहीं है | अरुण कहता है,"कोई क्यों खरीदेगा | तब तो उनका ही है | उन्होंने हमारे घर आपस में बाँट भी दिए हैं |"[6] वादी में स्वार्थ और इस्लामीकरण की प्रवृत्ति बढ रही है |

'शरणागत दीनार्त ' कहानी का लसपंडित वादी में बुरे हालात होकर भी डटा रहा था | बेटा गाशा गाँव छोडने के लिए बहुत मनाता है परंतु वह मानता नहीं | बेटी जया पर अत्याचार होने पर विवश होकर मटन गाँव छोडकर त्रिकूटा नगर चला जाता है | वहाँ शरणार्थियों को घृणा की दृष्टी से देखा जाता है | बस में बेहोश पड़े लसपंडित को देखकर लोग कहते हैं , "होगा कोई शरणागत ! माइग्रेंट ! जिधर देखो उधर ये ही लोग तो नजर आते हैं .....|

बेचारे ! कब तक सड़ते रहेंगे कैपों में ! चार साल से उपर हो गए.....| पहले-पहले मुसिबतजदा जान लोगों ने दया दिखाई | पर कितनी देर ? स्कूल कालेज, बाजार,दुकान भर गए और जहाँ देखो वहाँ माइग्रेंट कैंप,माइग्रेंट शाप, माइग्रेंट स्कूल ! "[7] नवंबर,1989 में निष्कासित हुए लसपंडित और उनके साथ अन्य और लोग हालात ठिक हो जाएँगे इस भरोसे पर बैठे हैं | साधनों से ठसाठस भरे घर छोड़ आए शरणार्थी यहाँ पर याचक और दरिद्री कहलाते हैं | मुसलमान रियाज भी घर छोड़कर जाना चाहता है | उसे कई गुटों और गिरोह में बँटे जिहादी अपने साथ चलने की जबरदस्ती करते हैं | वह इस गुटों में शामिल होना नहीं चाहता है |'पायथन'कहानी का प्रेमनाथ अपनी बेटी की रक्षा हेतु प्रदेश छोड़कर आता है | उसे अपनी फिक्र नहीं है, कहता है, "बाप होकर बेटी की इज्जत-आबरू न बचाता तो जीकर क्या करता ? यों सात पुश्तोंका घरबार छोड़ना आसान नहीं होता बहन | अकेला होता तो कहीं न जाता | एक गोली खाकर मारा ही जाता न ? कौन यहाँ खूँटा गड़ाकर आया है ? आगे-पीछे तो सभी को जाना है .....!"[8]

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

चंद्रकांता स्पष्ट करती हैं कि काश्मीर की भूमि पर हमेशा आक्रमण होते रहे हैं और लोग निष्कासित होते रहे हैं | इस समय आगजनी,लूटपाट,मारकाट और औरतों पर अत्याचार होते रहे हैं | शरणार्थी लोग प्रदेश के बाहर भी अपमान,घृणा और अभावग्रस्त जिंदगी जी रहे हैं | इस समस्या का हल करने के लिए सरकार द्वारा भी कोई भरसक प्रयास नहीं हुए हैं |

संदर्भ सूची

1.चंद्रकांता , यहाँ वितस्ता बहती है,नॅशनल प्रकाशन, नई दिल्ली,प्रथम -1992,पृ.67

2.चंद्रकांता ,कथा सतिसर,राजकमलप्रकाशन, नई दिल्ली,प्रथम -2001,पृ.513

3.वही,पृ. 515

4.वही,पृ. 520

5. चंद्रकांता ,कोठे पर कागा,किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली,प्रथम -1993 ,पृ.3

6. चंद्रकांता ,सूरज उगने तक, भारतीय ज्ञानपीठ,नई दिल्ली, प्रथम -1994 ,पृ.252

7. चंद्रकांता ,काली बर्फ, किताब घरप्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम -1996,पृ.12

8. वही, पृ.19